

श्रीमद्भागवतम् स्कन्ध 10 अध्याय 46 — उद्धव का वृन्दावन आगमन

5 October 2026



मथुरा से प्रेम का संदेश लेकर चले उद्धव संध्या में, घर लौटती गायों की धूल के बीच, नन्द के ब्रज में पहुँचते हैं, और उन हृदयों के बीच एक रात बिताते हैं जो कृष्ण को भुला नहीं सकते।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

श्रीमद्भागवतम् विज्ञम में पुनः स्वागत है — श्रीमद्भागवत महापुराण की पवित्र कथाओं और शिक्षाओं की हमारी भक्तिमयी यात्रा। दशम स्कन्ध के इस छियालीसवें अध्याय में मथुरा से कृष्ण अपने प्रिय सखा उद्धव को विरह में तड़पते नन्द, यशोदा और गोपियों को सान्त्वना देने ब्रज भेजते हैं, और उद्धव एक पिता की स्मृतियों का उत्तर इस सत्य से देते हैं कि नन्द के घर का बालक प्रत्येक प्राणी का आत्मा और ईश्वर है।

अध्याय-परिचय

- शास्त्र: श्रीमद्भागवत महापुराण
- स्कन्ध: 10 (दशम स्कन्ध, पूर्वार्ध)
- अध्याय: 46 (षट्चत्वारिंश अध्याय)

- अध्याय शीर्षक: उद्धव का वृन्दावन आगमन
- मुख्य वक्ता: श्री शुकदेव गोस्वामी; अध्याय के भीतर श्रीकृष्ण, नन्द और उद्धव
- मुख्य श्रोता: राजा परीक्षित
- मुख्य स्थल: मथुरा, और व्रज (वृन्दावन) में नन्द का गोकुल
- केंद्रीय विषय: उद्धव के द्वारा व्रज को कृष्ण का संदेश; नन्द की स्मृतियाँ; उद्धव की शिक्षा कि कृष्ण सबके आत्मा हैं
- मुख्य श्लोक-सीमा: स्कन्ध 10, अध्याय 46, श्लोक 1–49
- मूल संस्करण: गीता प्रेस श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी, दशम स्कन्ध)

पूर्व अध्याय का संदर्भ

पैतालीसर्वे अध्याय में कृष्ण और बलराम ने सान्दीपनि मुनि के पास विद्या पूर्ण की, गुरुदक्षिणा में यम-लोक से गुरु का खोया पुत्र लौटाया, और मथुरावासियों के आनन्द के बीच मथुरा लौटे।

कृष्ण उद्धव को व्रज भेजते हैं

शुकदेवजी ने पावन कथा आगे बढ़ाई। वृष्णिवंश में उद्धव थे — उस कुल के शिरोमणि, कृष्ण के मन्त्री और प्रिय सखा, बृहस्पति के साक्षात् शिष्य और बुद्धिमानों में श्रेष्ठ। एक दिन शरणागतों का दुःख हरने वाले श्रीहरि ने उद्धव का हाथ अपने हाथ में लेकर इस अनन्य भक्त से कहा।

गच्छोद्धव व्रजं सौम्य पित्रोर्नौ प्रीतिमावह ।

गोपीनां मद्वियोगाधिं मत्सन्देशैर्विमोचय ॥ ३ ॥

gacchoddhava vrajam saumya pitror nau prītim āvaha gopīnām mad-viyogādhim mat-sandēśair vimocaya

अर्थ: सौम्य उद्धव, तुम व्रज जाओ; हमारे माता-पिता को आनन्द दो, और मेरे संदेशों से गोपियों को मेरे विरह से उत्पन्न मानसिक व्यथा से मुक्त करो। (स्कन्ध 10, अध्याय 46, श्लोक 3)

फिर प्रभु ने स्वयं व्रज की उन स्त्रियों की दशा बताई, जिन्होंने अपना मन, अपने प्राण और अपना आत्मा तक उन्हें सौंप दिया था।

ता मन्मनस्का मत्प्राणा मदर्थे त्यक्तदैहिकाः ।

मामेव दयितं प्रेष्ठमात्मानं मनसा गताः ।

ये त्यक्तलोकधर्माश्च मदर्थे तान् बिभर्म्यहम् ॥ ४ ॥

tā man-manaskā mat-prāṇā mad-arthe tyakta-daihikāḥ mām eva dayitaṁ preṣṭham ātmānaṁ manasā gatāḥ ye tyakta-loka-dharmāś ca mad-arthe tān bibharmy aham

अर्थ: उनका मन मुझमें लगा है और उनके प्राण मुझमें टिके हैं; मेरे लिए उन्होंने देह से जुड़ा सब कुछ त्याग दिया है, और हृदय से मुझे ही अपना प्रिय, अपना प्रियतम, अपना आत्मा मान लिया है। जिन्होंने मेरे लिए लोक-धर्म तक छोड़ दिया, उनका भरण-पोषण मैं स्वयं करता हूँ। (स्कन्ध 10, अध्याय 46, श्लोक 4)

कृष्ण ने आगे कहा — मैं, जो उनके प्रियजनों में भी प्रियतम हूँ, उनसे इतनी दूर हूँ; इसलिए गोकुल की स्त्रियाँ मुझे स्मरण करती हुई अपनी सुध-बुध खो बैठती हैं और विरह की उत्कण्ठा से विह्वल रहती हैं। वे बड़ी कठिनाई से किसी प्रकार प्राण धारण किए हुए हैं — केवल मेरे लौट आने के आश्वासनों के सहारे।



उद्धव का हाथ अपने हाथ में लेकर कृष्ण उन्हें व्रज भेजते हैं, ताकि वे माता-पिता को आनन्द दें और अपने संदेशों से गोपियों की विरह-व्यथा दूर करें (श्लोक 3)।

संध्या में रथ व्रज पहुँचता है

ऐसी आज्ञा पाकर उद्धव ने अपने स्वामी का संदेश आदरपूर्वक ग्रहण किया, रथ पर चढ़े और नन्द के गोकुल की ओर चल पड़े। वे ठीक सूर्यास्त के समय नन्द के व्रज में पहुँचे; उसी घड़ी घर लौटते पशुओं के खुरों से उड़ी धूल ने उनके रथ को ढक लिया था।

मदमत्त साँड़ जूझते हुए गरज रहे थे; दूध से भरी गायें अपने बछड़ों की ओर दौड़ रही थीं; श्वेत बछड़े कुल्लों में भर रहे थे; दुहने की ध्वनि बाँसुरी में घुल रही थी। आभूषणों से सजी गोपियाँ गोपों के बीच बलराम और कृष्ण के शुभ कर्मों के गीत गा रही थीं। घरों में अग्नि, सूर्य, अतिथि, गौ, ब्राह्मण, पितर और देवताओं की पूजा धूप, दीप और मालाओं के बीच हो रही थी। चारों ओर वन फूलों से लदे, पक्षियों और भौंरों से गूँजते थे, और कमल-वनों में हंस और कारण्डव भरे थे। व्रज पहले जैसा ही सुन्दर था, और उसका हर गीत कृष्ण का था।

नन्द कृष्ण के दूत का स्वागत करते हैं

नन्द ने द्वार पर कृष्ण के प्रिय सेवक को प्रसन्नता से गले लगाया और उनका ऐसा सत्कार किया मानो स्वयं कृष्ण आए हों। खीर खिलाकर, पलंग पर बैठाकर और पाँव दबवाकर थकान मिटाने के बाद नन्द ने अपने प्रियजनों का कुशल पूछना आरम्भ किया।

क्या हमारे मित्र शूरनन्दन वसुदेव कुशल से हैं, उन्होंने पूछा, अब जब वे बन्धन से मुक्त होकर अपने पुत्रों और स्वजनों से मिल गए हैं? सौभाग्य से धर्मशील यदुवंशियों से सदा द्वेष करने वाला पापी कंस अपने अनुचरों सहित अपने ही पाप से मारा गया। और फिर उनके हृदय का प्रश्न।

अपि स्मरति नः कृष्णो मातरं सुहृदः सखीन् ।

गोपान् व्रजं चात्मनाथं गावो वृन्दावनं गिरिम् ॥ १८ ॥

api smarati naḥ kṛṣṇo mātaram suhṛdaḥ sakhīn gopān vrajaṁ cātma-nāthaṁ gāvo vṛndāvanam girim

अर्थ: क्या कृष्ण हमें स्मरण करते हैं — अपनी माता को, अपने हितैषियों और सखाओं को, गोपों को, उस व्रज को जो उन्हें अपना रक्षक मानता था, गायों को, वृन्दावन को और गिरिराज को? (स्कन्ध 10, अध्याय 46, श्लोक 18)

क्या गोविन्द एक बार भी अपने जनों को देखने आएँगे, नन्द कहते गए; तब हम फिर उस सुन्दर नासिका, मधुर मुस्कान और चितवन वाले मुख के दर्शन करेंगे। उन्होंने स्मरण किया कि परम उदार कृष्ण ने उन्हें दावानल से, आँधी और वर्षा से, वृषासुर अरिष्ट से और अजगर से बचाया था — ऐसी मृत्युओं से जिनसे बचना असम्भव था। प्रिय उद्धव, जब भी हम कृष्ण के पराक्रम, उनकी लीलामयी तिरछी चितवन, उनकी हँसी और उनकी बातें याद करते हैं, हमारे सारे काम शिथिल पड़ जाते हैं; और जब हम मुकुन्द के चरणचिह्नों से अलंकृत नदियों, पर्वतों, वनों और क्रीड़ास्थलों को देखते हैं, तो हमारा मन पूरी तरह उन्हीं में लीन हो जाता है।

नन्द ने कहा कि वे कृष्ण और बलराम को देवताओं में श्रेष्ठ मानते हैं, जो देवताओं के किसी महान् प्रयोजन से पृथ्वी पर आए हैं, जैसा गर्गाचार्य ने कहा था। उन्होंने दस हज़ार हाथियों का बल रखने वाले कंस को, उसके दो मल्लों और कुवलयापीड हाथी सहित, वैसे ही मार डाला जैसे सिंह पशुओं को मारता है; कृष्ण ने कंस का प्रचण्ड धनुष ईख की तरह तोड़ दिया और एक हाथ पर सात दिन पर्वत उठाए रखा; और यहीं व्रज में उन दोनों ने देवों-असुरों को जीत चुके प्रलम्ब, धेनुक, अरिष्ट, तृणावर्त, बक आदि दैत्यों को खेल-खेल में मार डाला।



नन्द कृष्ण के प्रिय सेवक का ऐसा स्वागत करते हैं मानो स्वयं कृष्ण आए हों, और पूछते हैं कि क्या उनका पुत्र अब भी व्रज को याद करता है (श्लोक 18)।

नन्द का मौन और यशोदा के आँसू

यह सब बार-बार स्मरण करते हुए कृष्ण में अनुरक्त नन्द असह्य उत्कण्ठा से घिरकर, प्रेम के प्रवाह में डूबकर, मौन हो गए। अपने पुत्र के चरित्र सुनती यशोदा रो पड़ीं, और वात्सल्य से उनके स्तनों से दूध बहने लगा। उन दोनों का ऐसा परम प्रेम देखकर उद्धव आनन्द से भर उठे और नन्द से बोले।

उद्धव का उत्तर: केवल आपके पुत्र नहीं

उद्धव ने कहा — हे मानद, निश्चय ही आप दोनों पृथ्वी के समस्त देहधारियों में सबसे अधिक श्लाघनीय हैं, क्योंकि आपने अखिल गुरु नारायण में ऐसा प्रेम किया है। बलराम और कृष्ण विश्व के बीज और योनि हैं, पुरुष और प्रधान हैं; प्राणियों में प्रवेश कर ये दोनों पुराण पुरुष उनके भीतर की चेतना पर शासन करते हैं। जो मृत्यु के समय क्षण भर भी अशुद्ध मन कृष्ण में लगा देता है, वह समस्त कर्म-संस्कार जलाकर शीघ्र परम गति पा लेता है। आपने अपना पूरा हृदय सबके कारण और आत्मा नारायण में लगा दिया है, जिन्होंने किसी प्रयोजन से मनुष्य-सा रूप धारण किया है। अब आपके लिए कौन-सा पुण्य कर्म शेष रह गया?

उद्धव ने आश्वासन दिया — थोड़े ही समय में सात्वतों के स्वामी अच्युत व्रज लौटेंगे और अपने माता-पिता को आनन्दित करेंगे। रंगभूमि में कंस को मारकर उन्होंने आपके पास आकर जो कहा था, उसे वे सत्य करेंगे।

मा खिद्यतं महाभागौ द्रक्ष्यथः कृष्णमन्तिके ।

अन्तर्हृदि स भूतानामास्ते ज्योतिरिवैधसि ॥ ३६ ॥

mā khidyataṁ mahā-bhāgau drakṣyathaḥ kṛṣṇam antike antar hṛdi sa bhūtānām āste jyotir iva idhasi

अर्थ: हे महाभाग्यशाली दम्पति, शोक न करें; आप कृष्ण को अपने निकट देखेंगे। जैसे काठ में अग्नि छिपी रहती है, वैसे ही वे समस्त प्राणियों के हृदय के भीतर विराजमान हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 46, श्लोक 36)

फिर उद्धव ने उस प्रियतम का स्वरूप खोला। देहाभिमान से रहित उनके लिए न कोई प्रिय है, न अप्रिय; न कोई उत्तम, न अधम, न असमान, क्योंकि वे सबके प्रति सम हैं। उनकी न माता है, न पिता, न पत्नी, न पुत्र; न कोई अपना, न पराया; न देह, न जन्म, न कर्म उन पर आरोपित हो सकता है। फिर भी लीला के लिए और साधुओं की रक्षा के लिए वे उत्तम, अधम और मिश्रित योनियों में जन्म लेते हैं। तीनों गुणों से अछूते रहकर भी वे सत्त्व, रज और तम को स्वीकार करते हैं, और उनसे क्रीड़ा करते हुए अजन्मा प्रभु विश्व की सृष्टि, पालन और संहार करते हैं। जैसे घूमती आँखों वाले को पृथ्वी घूमती दिखती है, और मन के कर्ता होने पर भी आत्मा कर्ता मान लिया जाता है, वैसे ही गुणों के कार्य करने पर भी ईश्वर जगत् का कर्ता माना जाता है।

युवयोरेव नैवायमात्मजो भगवान् हरिः ।

सर्वेषामात्मजो ह्यात्मा पिता माता स ईश्वरः ॥ ४२ ॥

yuvayor eva naivāyam ātmajo bhagavān hariḥ sarveṣām ātmajo hy ātmā pitā mātā sa īśvaraḥ

अर्थ: ये भगवान् हरि केवल आप दोनों के ही पुत्र नहीं हैं; वे सबके पुत्र, सबके आत्मा, सबके पिता, माता और ईश्वर हैं। (स्कन्ध 10, अध्याय 46, श्लोक 42)

उद्धव ने निष्कर्ष कहा — जो कुछ देखा या सुना गया है, जो हो चुका, हो रहा है या होने वाला है, जो स्थिर है या चल, महान् है या छोटा — अच्युत से भिन्न किसी वस्तु का नाम तक नहीं लिया जा सकता। वे ही सब कुछ हैं; वे ही परमात्मा हैं।



रात भर उद्धव नन्द को सान्त्वना देते हैं, यह प्रकट करते हुए कि कृष्ण काठ में छिपी अग्नि की तरह हर हृदय में बसते हैं और सबके आत्मा और ईश्वर हैं (श्लोक 36 और 42)।

रात बीतती है और प्रातः गोपियाँ दही मथती हैं

हे राजन्, इस प्रकार नन्द और कृष्ण के सेवक के बातें करते-करते वह रात बीत गई। रात के अन्त में गोपियाँ उठीं, दीपक जलाए, अपने घर के देवताओं की पूजा की और दही मथने लगीं। दीपों के प्रकाश में उनके रत्न चमक उठे; रस्सी खींचते हुए उनके कंगन झूल रहे थे; कुंकुम से अरुण कपोलों पर कुण्डल दमक रहे थे। और मथते-मथते वे कमलनयन प्रभु के ऊँचे स्वर में गीत गाने लगीं; मन्थन की ध्वनि में घुला उनका वह स्वर स्वर्ग तक पहुँचा और उसने दिशाओं के समस्त अमंगल को दूर कर दिया।



रात के अन्त में गोपियाँ दीपक जलाकर दही मथती हैं, और कमलनयन प्रभु का उनका गीत स्वर्ग तक पहुँचता है।

नन्द के द्वार पर स्वर्ण-रथ

सूर्योदय होने पर ब्रजवासियों ने नन्द के द्वार पर स्वर्ण-मण्डित रथ देखा, और कृष्ण के सिवा संसार में कुछ न जानने वाली स्त्रियाँ एक-दूसरे से पूछने लगीं कि यह किसका रथ है। कहीं अकूर तो फिर नहीं आ गया, उन्होंने सोचा — वही जिसने कंस का काम सिद्ध किया और कमलनयन कृष्ण को मथुरा ले गया? क्या अब वह अपने मरे हुए स्वामी के पिण्डदान के लिए हमारे शरीरों की आहुति देगा? स्त्रियाँ ऐसी ही बातें कर रही थीं कि नित्यकर्म पूर्ण कर उद्धव नन्द के घर लौट आए।



सूर्योदय पर ब्रज की स्त्रियाँ नन्द के द्वार पर स्वर्ण-रथ देखती हैं और डरती हैं कि कहीं अकूर फिर तो नहीं आ गया।

इस अध्याय को प्रमुख शिक्षाएँ

1. जो उनके लिए सब कुछ त्याग देते हैं, प्रभु स्वयं उनका भरण करते हैं। कृष्ण उद्धव से कहते हैं कि गोपियों ने उनके लिए देह, लोक और धर्म तक त्याग दिया है, और ऐसे जीवों को वे स्वयं सँभालते हैं।
2. विरह स्मरण का गहनतम रूप हो सकता है। नन्द काम नहीं कर पाते, क्योंकि हर नदी, पर्वत और चरणचिह्न उनका मन मुकुन्द की ओर मोड़ देता है; अपने पुत्र के चरित्र सुनते ही यशोदा रो पड़ती हैं। ऐसा शोक भक्ति का अभाव नहीं, उसका सबसे सघन रूप है।
3. प्रभु से प्रेम ही सर्वोच्च उपलब्धि है। उद्धव कहते हैं कि नारायण में अपना सम्पूर्ण हृदय लगा देने के बाद नन्द-यशोदा के लिए कोई पुण्य कर्म शेष नहीं रहता। भक्ति किसी ऊँचे लक्ष्य की सीढ़ी नहीं; वही लक्ष्य है।
4. जो ब्रज में खेले, वे सबके आत्मा हैं। यही उद्धव के संदेश का हृदय है, और यही कारण है कि प्रभु उसे भेजते हैं। नन्द-यशोदा मथुरा गए पुत्र के लिए शोक करते हैं; उद्धव उनकी दृष्टि इस सत्य की ओर उठाते हैं कि यह पुत्र विश्व के बीज और योनि नारायण हैं, जो काठ में छिपी अग्नि की तरह हर हृदय में विराजते हैं — प्रत्येक प्राणी के पुत्र, पिता, माता और आत्मा, जो केवल लीला और साधुओं की रक्षा के लिए जन्म लेते हैं और गुणों से अछूते रहकर सृष्टि, पालन और संहार करते हैं। इस प्रकार कृष्ण की सान्त्वना दो रूपों में आती है: यह वचन कि वे लौटेंगे, और यह रहस्य कि उन्होंने किसी हृदय को कभी छोड़ा ही नहीं।
5. भक्ति दैनिक कार्य को पवित्र कर देती है। गोपियाँ कमलनयन प्रभु के गीत गाती हुई दही मथती हैं, और वह गीत दिशाओं से अमंगल दूर कर देता है। कृष्ण के स्मरण में किया गया साधारण काम पूजा बन जाता है।

एक भक्तिमय चिन्तन

इस अध्याय में एक शान्त विस्मय है: विश्व के स्वामी कृष्ण ब्रज को सोचना बन्द नहीं कर पाते। जिन्हें गोपियाँ नहीं भुला सकीं, उन्होंने भी गोपियों को नहीं भुलाया; वे उनकी दशा का इतना अन्तरंग वर्णन करते हैं कि स्पष्ट है — मथुरा से भी उन्होंने उनके विरह की हर टीस महसूस की है। उद्धव पाते हैं कि ब्रज ने गाना बन्द नहीं किया — बस हर ध्वनि कृष्ण का नाम बन गई है। नन्द के प्रश्न हृदय चीर देने वाले सरल हैं: क्या वे हमें याद करते हैं? क्या वे एक बार भी आएँगे? उद्धव का उत्तर उस पीड़ा को ठुकराता नहीं; उसे ज्ञान में गहरा कर देता है। शायद प्रभु से हमारे अपने वियोग भी इसी तरह जीने के लिए हैं: यह दिखावा करके नहीं कि उनकी कमी नहीं खलती, बल्कि उस कमी से अपने जीवन की हर धारा और हर पर्वत को उनकी स्मृति बना लेकर।

एक दैनिक भक्ति-अभ्यास

आज किसी एक साधारण काम को गोपियों का मन्थन बनने दें: भोजन बनाते, सफ़ाई करते, चलते या काम करते हुए पूरे समय धीरे-धीरे कृष्ण का नाम दोहराएँ, और वह काम ही उन्हें अर्पित कर दें। यदि प्रभु से दूरी महसूस हो, तो उसे नन्द की तरह एक प्रेमी हृदय के प्रश्न में बदल लें, और उद्धव के आश्वासन में विश्राम पाएँ कि वे भीतर ही विराजते हैं। आरम्भ में धीरे-धीरे जपें: ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

उपसंहार

दशम स्कन्ध का छियालीसवाँ अध्याय उद्धव के रूप में कृष्ण के हृदय को मथुरा से फिर व्रज ले जाता है। प्रभु सर्वस्व समर्पित गोपियों के भरण का वचन देते हैं; नन्द अपनी स्मृतियाँ तब तक उँड़ेलते हैं जब तक प्रेम उन्हें मौन न कर दे; और उद्धव प्रकट करते हैं कि व्रज का पुत्र हर हृदय में बसे नारायण हैं, जो अवश्य लौटेंगे। इस अध्याय की एकमात्र सीख यह है कि जिन प्रभु के लिए हम शोक करते हैं वे पहले से हमारे भीतर हैं, और ऐसा शोक स्वयं उनके प्रेम का उपहार है।

श्रीमद्भागवतम् का दिव्य ज्ञान हमारे हृदयों में शुद्ध भक्ति जगाए।

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय।

जय श्री माधव।

संदर्भ एवं आभार

- मूल संस्करण: गीता प्रेस, श्रीमद्भागवत महापुराण (अंग्रेज़ी), दशम स्कन्ध (पूर्वार्ध), अध्याय 46, पृष्ठ 296–301।
- शृंखला: श्रीमद्भागवतम् विज़डम • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट।
- पण्डित डॉ. श्री काशीनाथ मिश्र के आध्यात्मिक मार्गदर्शन एवं अनुशंसा के अनुसार प्रस्तुत।

यह लेखक के अपने शब्दों में एक मौलिक, श्रद्धापूर्ण पुनर्कथन है, जिसमें संक्षिप्त उद्धृत श्लोक देवनागरी एवं लिप्यन्तरण सहित दिए गए हैं और उनके अर्थ सारांश रूप में प्रस्तुत हैं। यह किसी एक प्रकाशक के सतत अनुवाद या टीका का पुनरुत्पादन नहीं है। किसी प्रकाशक के संबंध या समर्थन का दावा नहीं किया गया है।

॥ हरि ॐ तत्सत् ॥

जय श्री माधव

ऑनलाइन पढ़ें: kalkiabatara.org/hi/blog-srimad-bhagavatam-canto-10-chapter-46-uddhava-visits-vrindavana-hi.html

श्रीमद्भागवतम् विज़डम • कल्कि अवतार इंटरनेशनल • बिस्व सनातन धर्म सेवा ट्रस्ट